भट्टारक धर्मकीर्ति

जीवन-परिचय : भट्टारक परम्परा में धर्मकीर्ति नाम के चार भट्टारकों का निर्देश प्राप्त होता है।

1. धर्मकीर्ति : त्रिभुवनकीर्ति के शिष्य
2. धर्मकीर्ति : भुवनकीर्ति के शिष्य
3. धर्मकीर्ति : सिंहकीर्ति के शिष्य
4. धर्मकीति : ललितकीर्ति के शिष्य

ललितकीर्ति के शिष्य धर्मकीर्ति का जैन संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान है। इन्होंने कई मूर्तियों एवं यंत्रों की स्थापना कराई है।

इनका समय विक्रम की 16-17वीं शताब्दी है।

रचना-परिचय : इनके द्वारा रचित दो रचनाएँ प्राप्त होती हैं—

1. पद्मपुराण : प्रथम रचना पद्मपुराण विक्रम संवत् 1668 में सावन महीने की तृतीया शनिवार के दिन मालवा देश में पूर्ण की गयी है। पद्मपुराण की रचना रविषेण के पद्मचरित के आधार पर की गयी है।

2. रचनापुराण : हरिवंशपुराण विक्रम संवत् 1671 अश्विन कृष्ण पञ्चमी रविवार के दिन पूर्ण हुआ है। इसमें 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ का चरित अंकित है।